विचार बिन्दु

अपनी नम्रता का गर्व करने से अधिक निंदनीय और कुछ नहीं है। –मारकस

सैटेलाइट के सफल लॉन्च से इसरो की साख बची

पांच साल के लंबे इंतज़ार के बाद, इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइज़ेशन (इसरो) ने गत शुक्रवार को एक जियो-इमेजिंग सैटेलाइट स्पेस में स्थापित करने में सफल रहा है। ईओएस-05 सैटेलाइट स्पेसपोर्ट श्रीहरिकोटा से उड़ान भरने के लगभग 18 मिनट बाद, तय सब-जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट में सफलतापूर्वक स्थापित हो गया। इसरो के लिए यह सिर्फ़ एक और लॉन्च नहीं था। उसके लगातार दो स्ट्रेटेजिक मिशन फेल हो चुके थे, जिससे देश को कई सौ करोड़ रुपये का नुकसान हुआ था। इसीलिए इसरो के लिये यह लॉन्च खास था और ऐसे मुश्किल समय पर हो रहा था जब उसके भविष्य को लेकर अनेक शंकाएं भी मीडिया में व्यक्त हो रही थीं कि इसके रॉकेट (एक को छोड़कर) घरेलू कंपनियों को दिए जा रहे हैं; सरकार सैटेलाइट मैन्युफैक्चरिंग और तमिलनाडु में प्रस्तावित स्पेसपोर्ट को भी प्राइवेट सेक्टर के लिए खोल रही है; लॉन्च इंफ्रास्ट्रक्चर का निजीकरण किया जा रहा है; नेवल सी नेविगेशन सिस्टम अधर में लटका हुआ है; और सरकार चाहती है कि इसरो रिसर्च, डेवलपमेंट और बड़े साइंटिफिक मिशन पर ध्यान दे। यह भी सच है कि संस्थान के कर्मचारियों में भी अनिश्चितता का माहौल बताया जाता रहा है। ज़रूरी मिशन में शामिल कई लोग अपने पद छोड़ कर जा चुके हैं और बाकी स्टाफ भी अपनी भविष्य की भूमिकाओं के बारे में स्पष्ट नहीं है। इस पृष्ठभूमि में, शुक्रवार का जीआईसेट-1ए सैटेलाइट, जिसका नाम बदलकर अर्थ ऑब्ज़र्वेशन सैटेलाइट-05 (ईओएस-05) कर दिया गया, को जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल-एमके (जीएसएलवी-एमके) से लॉन्च करने का यह मिशन, कहीं ज़्यादा अहमियत रखता था। ईओएस-05, जीआईसेट-1 का लंबे समय से रुका हुआ रिप्लेसमेंट है, जो अगस्त 2021 में अपने लॉन्च के बीच में ही खो गया था। उसके बाद से इसरो इस बात पर चुप रही है कि पांच साल का गैप किस वजह से हुआ -- चाहे वह पेलोड डेवलपमेंट हो, सैटेलाइट मैन्युफैक्चरिंग हो, जीआईसेट-1 और जीआईसेट-1ए के बीच स्पेसिफिकेशन्स में बदलाव हो, रॉकेट का न होना हो या कुछ और। इसरो ने ईओएस-05 को एक एजाइल जियो इमेजिंग सैटेलाइट बताया है जिसे जियोस्टेशनरी ऑर्बिट से लगातार अंतराल पर बड़े एरिया की लगभग रियल-टाइम इमेज देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह मुख्य रूप से साफ आसमान (क्लाउड-फ्री) परिस्थिति में प्राकृतिक संपदा और आपदा की घटनाओं की इमेजिंग के लिए बनाया गया है। इसका फायदा इसकी लोकेशन में है। लोअर ऑर्बिट में परंपरागत अर्थ-ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट के उलट, एक जियोस्टेशनरी इमेजिंग सैटेलाइट बार-बार एक बड़े एरिया पर निगाह रख सकता है, जिससे वह उस क्षेत्र में तेजी से बदलती घटनाओं की निगरानी करने और किसी खास एरिया की लगातार इमेज देने के लिए उपयोगी हो जाता है। वैसे, कैमरे से लैस किसी भी सैटेलाइट का इस्तेमाल कई अन्य मकसदों के लिए भी किया जा सकता है और इसलिए सभी को, एक तरह से, 'स्ट्रेटेजिक सैटेलाइट' कहा जा सकता है।

शुक्रवार का लॉन्च एक बड़ा पेलोड लेकर गया था और साथ में पिछली असफलताओं का बड़ा बोझ भी। इसलिये, ईओएस-05 एक देर से आने वाले रिप्लेसमेंट सैटेलाइट से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है। लगभग 2,367 किलो वज़न वाला, यह सैटेलाइट जीएसएलवी-एमके की बताई गई पेलोड कैपेसिटी 2,250 किलो से ज़्यादा भारी है। इसके वजन के कारण इस मिशन ने सब-जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट का इस्तेमाल किया जो एक इंटरमीडिएट एलिप्टिकल ऑर्बिट है, जिसमें एपोजी लगभग 35,780 किलोमीटर की लक्षित जियोसिंक्रोनस ऊंचाई से कम होती है। इस ऑर्बिट से, ईओएस-05 ने अपनी तय जियोस्टेशनरी पोज़िशन तक पहुंचने के लिए अपने ऑनबोर्ड मोटर्स का इस्तेमाल किया। टेक्निकली, यह मौजूदा लॉन्च व्हीकल की कैपेसिटी को बढ़ाने की इसरो की काबिलियत का एक और प्रदर्शन था। इसके स्ट्रेटेजिकली, दांव ज़्यादा ऊंचे हैं, क्योंकि ईओएस-05 के इस सफल लॉन्च ने कई महंगी नाकामियों के बाद भरोसा वापस लाने की प्रक्रिया शुरू की है। अगर यह फेल हो जाता, तो भारत के लॉन्च सिस्टम और स्ट्रेटेजिक स्पेस प्रोग्राम के भरोसे पर अनेक सवाल उठने लगते। इस तरह, यह लॉन्च जीएसएलवी-एमके , पांच साल से देरी से आई स्ट्रेटेजिक क्षमता और शायद सबसे ज़रूरी, इसरो की भरोसा वापस लाने की क्षमता का टेस्ट थी था। चिंता सिर्फ़ पैसे के नुकसान की नहीं थी। यह भरोसे, ट्रांसपेरेंसी और भारत की अपने स्पेस एसेट्स पर तब निर्भर रहने की क्षमता के बारे में थी जो सबसे ज़्यादा ज़रूरी है। कह सकते हैं कि इसरो के लिए, शुक्रवार का दिन सिर्फ़ एक और सैटेलाइट को ऑर्बिट में भेजने का नहीं था, बल्कि यह यह साबित करने का भी था कि जब दांव ऊंचे हों, तब भी एजेंसी काम कर सकती है।

> **अधिकृत तौर पर बताया गया कि तीसरे स्टेज के परफॉर्मेंस के आखिर में रॉकेट में गड़बड़ी आ गई, जिससे उसकी तय उड़ान अपने रास्ते से भटक गयी। पीएसएलवी मिशन से वाकिफ एक्सपर्ट का कहना है कि यह फेलियर पीसएलवी-सी61 जैसा ही लग रहा था। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए ज़रूरी मिशनों में एक के बाद एक फेलियर होना बहुत ज़्यादा इत्तेफाक रहा। इन्हीं परिस्थितियों में शुक्रवार का मिशन इसरो की साख को जबरदस्त चुनौती थी। मिशन की सफलता से वह साख बच गई।**

पीएसएलवी-सी62 के फेल होने के बाद, भारत सरकार ने पूर्व प्रिंसिपल साइंटिफिक एडवाइजर के विजय राघवन की अगुवाई में एक उच्च स्तरीय कमेटी बनाई थी, जिसमें इसरो के पूर्व अध्यक्ष एस. सोमनाथ को-चेयरमैन थे। यह कदम नेशनल सिक्योरिटी एडवाइजर अजीत डोभाल के तिरुवनंतपुरम में विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर का चुपचाप दौरा करने के बाद उठाया गया था। हालांकि पीएसएलवी-सी61 और पीएसएलवी-सी62 की जांच कर रही फेलियर एनालिसिस कमेटियों ने,बताते हैं अपनी रिपोर्ट दे दी हैं, लेकिन इसरो की पिछली फेलियर रिपोर्ट के विपरीत, उन्हें सार्वजनिक नहीं किया गया है। इससे स्पेस कम्युनिटी में नए सवाल खड़े कर दिए थे। हालांकि इसरो के अधिकारियों ने बताया था कि पीएसएलवी से जुड़े सुधार के उपायों पर चर्चा अब पूरी तरह से "जानने की ज़रूरत" के आधार पर की जा रही है। इसलिए शुक्रवार के लॉन्च को लेकर चिंता की वजह स्ट्रेटेजिक रूप से ज़रूरी भारतीय स्पेस मिशन से जुड़ी कई नाकामियों की वजह से ही थी। इसके अलावा कई नेविगेशन सैटेलाइट पहले ही इम्पोर्टेड एटॉमिक घड़ियों में खराबी की वजह से पूरी क्षमता खो चुके हैं। कई लोग स्पेस सेक्टर में इस मुश्किल दौर की शुरुआत जीआईसेट-1 से मानते हैं। वह 2,268किलो का सैटेलाइट जीसएलवी एमके के क्रायोजेनिक अपर स्टेज में खराबी आने के बाद अंतरिक्ष में खो गया था। इसरो की फेलियर एनालिसिस कमेटी ने नतीजा निकाला था कि वेंट और रिलीफ वाल्व से लीकेज की वजह से क्रायोजेनिक स्टेज के इग्निशन के दौरान लिक्विड हाइड्रोजन टैंक का प्रेशर असामान्य रूप से कम हो गया था। इसके चलते फ्यूल बूस्टर टर्बो पंप में खराबी आई, जिससे आखिरकार मिशन फेल हो गया। इसके बाद इसरो ने दिखाया कि जीसएलवी एमके रिकवर कर सकता है, और उसने एनवीएस-01, इन्सेट-3डीएस और इंडो-यूएस निसार सैटेलाइट को सफलतापूर्वक लॉन्च किये। इसलिए, जानकार लोगों का कहना है कि भारत के स्पेस प्रोग्राम को सिर्फ़ नाकामियों वाला प्रोग्राम बताना गलत होगा। इसरो को अगला बड़ा झटका एनवीस-02के साथ लगा, जिसे 29 जनवरी, 2025 को श्रीहरिकोटा से 100वें रॉकेट लॉन्च के तौर पर लॉन्च किया गया था। 300 करोड़ रुपये के नेविगेशन सैटेलाइट को एक और 300 करोड़ रुपये के जीसएलवी एमके से जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट में सफलतापूर्वक इंजेक्ट किया गया। लेकिन वह अपने तय जियोस्टेशनरी ऑर्बिट तक नहीं पहुंच सका क्योंकि ऑर्बिट बढ़ाने के लिए ज़रूरी ऑक्सीडाइज़र वाल्व नहीं खुल पाए। इसरो ने समस्या तो मानी लेकिन यह कभी नहीं बताया कि वाल्व क्यों फेल हुए। सैटेलाइट एक्सपर्ट्स का मानना है कि समस्या ऑक्सीडाइज़र वाल्व को पावर सप्लाई करने वाले इलेक्ट्रिकल कनेक्टर में शुरू हुई होगी। इससे एक और बुनियादी सवाल उठता है कि मिशन-क्रिटिकल सिस्टम में रिडंडेंसी होनी चाहिए उस पर ध्यान करों नहीं गया? सैटेलाइट सिस्टम से परिचित अधिकारियों के अनुसार वाल्व, इलेक्ट्रॉनिक्स और पावर सिस्टम, सभी में रिडंडेंट बैकअप थे। लेकिन रिडंडेंसी तभी काम करती है जब बैकअप सिस्टम सच में प्राइमरी सिस्टम से अलग हो। अगर दोनों सिस्टम एक कॉमन पॉइंट पर मिलते हैं, तो एक फेलियर दोनों को खत्म कर सकता है। यदि इन नियमों को माना गया, तो ऑक्सीडाइज़र वाल्व तक पावर पहुंचने से किस चीज़ ने रोका? इसरो के ही एक रिटायर्ड सीनियर अधिकारी का कहना है कि प्राइमरी और रिडंडेंट दोनों पावर सप्लाई एक ही कनेक्टर से गुज़री होंगी, जिससे पूरी रिडंडेंसी का मकसद नाकाम हो गया।

दो पीएसएलवी मिशन के लगातार फेल होने से चिंता का बढ़ जाना स्वाभाविक ही था। पिछले साल 18 मई, 2025 को, पीएसएलवी-सी61 उड़ान भरने के करीब छह मिनट बाद फेल हो गया, जिससे ईओएस-09 (आरआईसेट-1बी) सर्विलांस सैटेलाइट और लॉन्च व्हीकल का नुकसान हुआ। कुल नुकसान का अनुमान करीब 850 करोड़ रुपये था। ईओएस-09 में एक सिंथेटिक अपर्चर रडार था जो हर मौसम में निगरानी कर सकता था और इसका मकसद भारत की स्ट्रेटेजिक ऑब्ज़र्वेशन क्षमता को मज़बूत करना था। अंदाज लगाया जाता है कि पीसेलवी-सी61 का फेलियर शायद किसी खराब वाल्व या इलेक्ट्रिकल कनेक्टर की वजह से हुआ होगा, जिसकी वजह से तीसरे स्टेज के ऑपरेशन के दौरान प्रेशर कम हो गया था। इसके आठ महीने से भी कम समय बाद, 12 जनवरी, 2026 को, पीसेलवी-सी62 भी फेल हो गया। यह डीआरडीओ के लेटेस्ट हाइपरस्पेक्ट्रल टोही सैटेलाइट, अन्वेषा (ईओएस-एन1) के साथ पंद्रह छोटे भारतीय और विदेशी सैटेलाइट ले जा रहा था। अधिकृत तौर पर बताया गया कि तीसरे स्टेज के परफॉर्मेंस के आखिर में रॉकेट में गड़बडी आ गई, जिससे उसकी तय उड़ान अपने रास्ते से भटक गयी। पीएसएलवी मिशन से वाकिफ एक्सपर्ट का कहना है कि यह फेलियर पीसएलवी-सी61 जैसा ही लग रहा था। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए ज़रूरी मिशनों में एक के बाद एक फेलियर होना बहुत ज़्यादा इत्तेफाक रहा। इन्हीं परिस्थितियों में शुक्रवार का मिशन इसरो की साख को जबरदस्त चुनौती थी। मिशन की सफलता से वह साख बच गई।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

जन्म के साथ ही समापन की ओर कॉकरोच जनता पार्टी

प्रो.कैलाश सोडाणी

देश के सार्वजनिक जीवन में बिना किसी जमीनी संघर्ष के मात्र सोशल मीडिया के माध्यम से अवतरित कॉकरोच जनता पार्टी आजकल चर्चा में है। चर्चा में व्यंग्य ज्यादा है, शालीनता कम है। संस्था के नामकरण में भी गंभीरता एवं दीर्घकालीन सोच का अभाव है, हास्य एवं विनोद का स्वर ही ज्यादा सुनाई देता है। नीट परीक्षा की असफलता एवं बेरोजगारी से पीड़ित युवा साथियों की भावनाओं से खेलते हुए अभिजीत दिपके ने जन्तर-मंतर पर जो अभिनय किया, उससे प्रथम दृष्टया तो यही लगा कि देश की युवा पीढ़ी को एक ईमानदार राजनैतिक नेतृत्व मिलने जा रहा है परन्तु धीरे-धीरे देश के युवाओं को समझ में आ गया कि आन्दोलन के असली सूत्रधार कौन है और उनका मकसद क्या है?

किसी भी आन्दोलन की सफलता के लिए उसका पारदर्शी होना अत्यन्त आवश्यक है। सीजेपी के इस आन्दोलन पर कितना खर्च हुआ और किसने किया, कोई जानकारी सार्वजनिक नहीं की गयी। सामान्य चर्चा में देश की राजनीति में पराजित चेहरों एवं भारत विरोधी विदेशी एजेन्सीज का नाम सामने आ रहा है।

प्रजातन्त्र में सरकार विरोधी आन्दोलन होना बहुत ही सामान्य बात है और प्रजातन्त्र की सफलता के लिए सरकारी नीतियों के विरुद्ध समय-समय पर विरोध प्रदर्शन होना भी आवश्यक है। इस प्रकार के आन्दोलनों की भी एक मर्यादा होती है, अनुशासन होता है। सीजेपी के इस आन्दोलन में कुछ असामाजिक तत्वों का बोलबाला था, जो देश एवं प्रधानमंत्री को बहुत ही घटिया तथा अमर्यादित शब्दों में सम्बोधित कर रहे थे। दुखद स्थिति तो यह थी कि अनेक छात्राएँ भी इसी गाली-गलौच की भाषा में बात कर रही थी। सोशल मीडिया पर इस दृश्य को देखने और सुनने के बाद देशवासियों का सिर शर्म से झुक गया। ऐसे संस्कार विहीन छात्र-छात्राओं की टीम कहाँ से आयी और उन पर किसी का नियंत्रण भी दिखाई नहीं दिया। इन छात्राओं के माता-पिता ने समाज में हुए अपमान को कैसे बर्दाश्त किया होगा, समझ सकते हैं।

इस सारे घटनाक्रम में समाजसेवी सोनम वांगचुक के सत्याग्रह में अवश्य ईमानदारी दिखाई देती है। उन्होंने कहा है कि लोकतंत्र में ऐसी शान्तिपूर्ण अभिव्यक्ति को पनपने दीजिये। ये हमारा प्रदर्शन नहीं, आग्रह है। पुलिस ने यह आन्दोलन शान्तिपूर्ण तरीके से होने दिया, रोक-टोक नहीं लगाई, यह स्वागत योग्य है। महत्वपूर्ण बात यह है कि आन्दोलन की समाप्ति के बाद कॉकरोच जनता पार्टी ने सोनम वांगचुक को पर्दे के पीछे धकेल दिया है।

झारखंड में भर्ती परीक्षाओं में धांधली के खिलाफ आंदोलनरत छात्रों को कॉकरोच जनता पार्टी का क्या केवल नैतिक समर्थन देना ही पर्याप्त है? जंतर-मंतर का आंदोलन प्रवेश परीक्षाओं में धांधली के लिए था, झारखंड में इससे कहीं ज्यादा गंभीर रोजगार-मूलक परीक्षाओं में धांधली होने के बावजूद सीजेपी की निष्क्रियता में कमजोर राजनीतिक सोच की गंध आती है। चार-पांच वर्ष पूर्व राजस्थान में भी भर्ती परीक्षाओं में हुई अनेकानेक गडबडियों के बावजूद अभिजीत दिपके अमेरिका का आनंदमय जीवन छोडकर नहीं आ पाए। सौभाग्य से देश का युवा समझदार है, उसे लंबे समय तक सत्य से दूर नहीं रखा जा सकता है।

आर. एस. एस. प्रमुख डा. मोहन भागवत ने जेन-जी के प्रदर्शनों के सम्बन्ध में बहुत ही सटीक विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि लोकतंत्र में विरोध प्रदर्शन भी संवाद का एक तरीका है। लेकिन इसका उद्देश्य सहमति बनाना हो न कि विभाजन। उन्होंने कहा कि जेन-जी की शिकायतें सही हैं, नाराजगी जायज है। शिक्षा व्यवस्था में सुधार की जरूरत है। शिक्षा को व्यापार मत बनने दीजिये। यह सबके लिए समान रूप से सुलभ होनी चाहिये। सरकार को जीडीपी का 6 प्रतिशत शिक्षा पर खर्च करना चाहिये। सोशल मीडिया पर प्रतिबन्ध समाधान नहीं है। युवाओं में सोशल मीडिया के जिम्मेदार उपयोग का आत्मानुशासन विकसित करना होगा। हमारी युवा शक्ति की गति ही देश की प्रगति की आधारशिला है। गति के साथ दिशा भी सही होना चाहिए। विश्वविद्यालयों को बच्चों को केवल डिग्री नहीं, दिशा एवं आत्मविश्वास भी देना होगा। ज्ञान के अमृत को व्हाट्सएप एवं ट्विटर पर तलाश करने की जरूरत नहीं है। पिछले एक दशक से हमारे देश के राजनैतिक नेतृत्व ने समस्त देशवासियों की सैकड़ो वर्षो से चली आ रही कमजोर मानसिकता में परिवर्तन करते हुए आत्म-गौरव एवं आत्मविश्वास का शंखनाद किया है। यह एक गौरवशाली एवं क्रांतिकारी शुभारंभ है। आज इसी दिशा एवं सोच से भरपूर हमारी युवा पीढी पर हमें गर्व है। जो टैलेंटेड है, आत्मविश्वास से लबालब है और मेरी पीढी से ज्यादा अनुशासित भी है। जो समस्याओं को टालने में नहीं, उससे टकराने में और उसे मिटाने में विश्वास करती है। ए. आई. में भाग्य और भविष्य देखने वाली ऐसी युवा शक्ति को सडकों पर नारेबाजी एवं गाली-गलौच करते हुए नहीं देख सकते हैं। साथ ही समाज को भी जेन-जी की प्रतिभा एवं भावनाओं का सम्मान करना होगा।

–प्रो.कैलाश सोडाणी,
पूर्व कुलगुरु, वर्धमान महावीर खुला विवि, कोटा

डिजिटल अफीम : साइलेंट डिप्रेशन की ओर धकेलती रील्स-शॉर्ट्स की सनक

डॉ. मोनिका शर्मा

रील्स और शॉर्ट्स को बिना सोचे-समझे स्क्रॉल करने की यह आदत धीरे-धीरे इंसानों को एक गहरे साइलेंट डिप्रेशन की ओर धकेल रही है। हमें यह समझना होगा कि चीजें और तकनीक दोबारा खरीदी जा सकती हैं, लेकिन खोई हुई जिंदगी और परिवार कभी वापस नहीं आते। इस बात को हम जितनी जल्दी समझ लेंगे, उतना ही सभी के लिए बेहतर होगा।

आज की डिजिटल दुनिया में अत्यधिक स्क्रीन टाइम मानसिक अवसाद यानी डिप्रेशन का सबसे बड़ा कारण बन रहा है। दिखावे की संस्कृति और अनियंत्रित मानसिक अवसाद हंसते-खेलते परिवारों को तबाह कर रहे हैं। हाल ही में महाराष्ट्र के संभाजीनगर में आईफोन की जिद के विवाद में एक 19 वर्षीय युवक और उसे बचाने के प्रयास में उसके माता-पिता की पहाड़ी से गिरकर हुई दर्दनाक मौत इस बात का जीता-जागता और भयावह उदाहरण बना है। घटना केवल एक फोन की जिद नहीं, बल्कि इसके पीछे युवाओं में लग्जरी लाइफस्टाइल, घटते सब्र, गंभीर स्क्रीन एडिक्शन और छिपे हुए मानसिक अवसाद की गहरी समस्या की तस्वीर का संकेत और चेतावनी हैं।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, सोशल मीडिया और फोन युवाओं के लिए एस्केप मोड (भागने का जरिया) और डोपामाइन (फील गुड हार्मोन) का प्राथमिक स्त्रोत बन चुके हैं। जब यह कनेक्शन टूटता है, तो वे अत्यधिक चिड़चिड़े या हिंसक हो जाते हैं। महंगे गैजेट्स को स्टेटस सिंबल मानकर युवा अपनी आर्थिक स्थिति से परे जाकर जिद करने लगते हैं। सामाजिक तौर पर ये समस्या घरों में आपसी संवाद की कमी से भी बढ़ रही है, जहां एक ही घर में रहकर भी लोग स्क्रीन में खोए रहते हैं, जिससे आपस में भावनात्मक जुड़ाव और बातचीत खत्म हो रही है। ये पहचान न आने वाला अवसाद हैं।

महाराष्ट्र के संभाजीनगर के गांव में हुए ताजा घटनाक्रम के अनुसार, 19 साल के कुणाल ने आईफोन खरीदकर और उसकी किश्त चुकाने को लेकर अपने पिता से जिद की थी, जिसे लेकर घर में अनबन और विवाद हुआ। गुस्से और नाराजगी में कुणाल घर से निकलकर पहाड़ की चोटी पर जा बैठा और करीब 4 घंटे तक हंगामा व आत्महत्या की धमकी देता रहा। सूचना पर माता-पिता, पुलिस, स्थानीय लोग और दमकल विभाग मौके पर पहुंचे तथा उसे समझाने की कोशिश की। मां ने बेटे को मनाने के लिए अपना मंगलसूत्र तक देने की बात भी कही। बातचीत के दौरान जब पिता उसे बचाने के लिए आगे बढ़े, तो उनका संतुलन बिगड़ गया और कुणाल के साथ पिता भी नीचे गिर पड़े। अपनी आंखों के सामने पति और बेटे को नीचे गिरते देख सदमे में आई मां ने भी पहाड़ी से छलांग लगा दी, जिससे एक ही परिवार के तीनों सदस्यों की मौत हो गई।

मनोचिकित्सकों का मानना है कि किशोरों में अवसाद अक्सर उदासी के रूप में नहीं, बल्कि अत्यधिक गुस्से और चिड़चिड़ेपन के रूप में बाहर आता है, जिसे माता-पिता बदतमीजी या नखरा समझकर नजरअंदाज कर देते हैं। सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक, हमारे हाथ स्मार्टफोन से चिपके रहते हैं। रील्स और शॉर्ट्स को बिना सोचे-समझे स्क्रॉल करने की यह आदत धीरे-धीरे इंसानों को एक गहरे साइलेंट डिप्रेशन की ओर धकेल रही है। शोध कहते हैं कि प्रतिदिन 3 से 4 घंटे से अधिक स्क्रीन पर बिताने वाले लोगों में अवसाद/एंग्जायटी का जोखिम दोगुना हो जाता है। केंद्र सरकार ने बच्चों और युवाओं में बढ़ती डिजिटल लत को एक गंभीर साइलेंट क्राइसिस घोषित किया है। सर्वे में माता-पिता से मिले फीडबैक के आधार पर बच्चों में ये बदलाव देखे गए हैं। 61 फीसदी बच्चों में अधीरता बढ़ गई है। 58 प्रतिशत बच्चों में अत्यधिक गुस्सा और आक्रामकता देखी गई है।

सर्वे कहता है कि लगभग आधे बच्चों में नींद की कमी, डिप्रेशन और सुस्ती पाई गई है। वहीं शॉर्ट वीडियो (रील्स) के लूप में फंसे रहने से युवाओं की एकाग्रता क्षमता बहुत कम हो गई है। फोन छीनने या गेमिंग से रोकने पर बच्चे हिंसक कदम उठा रहे हैं। लखनऊ में एक 16 वर्षीय लड़के द्वारा गेमिंग की लत के कारण टोकने पर अपनी मां की हत्या करने जैसी दिल दहलाने वाली घटना सामने आई हैं। एम्स दिल्ली और अमेरिकी मेडिकल जर्नल की रिपोर्ट्स के अनुसार, स्क्रीन और सोशल मीडिया एडिक्शन के शिकार बच्चों में आत्महत्या से संबंधित जोखिम अधिक पाया गया है। गाजियाबाद में ऑनलाइन गेमिंग और मोबाइल की लत के चलते तीन नाबालिग बहनों द्वारा नौवीं मंजिल से कूदकर खुदकुशी करने की घटना इसका उदाहरण है। सड़कों, रेलवे ट्रैक और खतरनाक ऊंचाई पर इंस्टाग्राम रील्स या शॉर्ट वीडियो शूट करने के जुनून में हर साल सैकड़ों भारतीय युवा अपनी जान गंवा रहे हैं या गंभीर हादसों का शिकार हो रहे हैं। यूनिसेफ की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 15 से 24 वर्ष के 14 प्रतिशत युवा (हर 7 में से 1) अक्सर अवसाद या मानसिक तनाव का अनुभव करते हैं। निमहांस सर्वेक्षण के अनुसार, 13 से 17 वर्ष के 7.3 फीसदी किशोर गंभीर मानसिक विकारों से पीड़ित हैं। शहरी क्षेत्रों में यह संख्या और भी अधिक पाई गई है। एनसीईआरटी छात्र सर्वेक्षण में स्कूल जाने वाले 11 प्रतिशत छात्रों ने अत्यधिक चिंता, 14 फीसदी ने चरम भावनाओं और 43 प्रतिशत ने मूड स्विंग्स की शिकायत की है। आईसीएमआर अध्ययन में कॉलेज जाने वाले 32 प्रतिशत छात्रों में मध्यम से गंभीर अवसाद के लक्षण देखे गए हैं। स्पेन लैब्स की युवा मानसिकता रिपोर्ट के अनुसार, इंटरनेट और डिजिटल दुनिया से जुड़े 13-17 वर्ष के भारतीय किशोरों में आक्रामकता, गुस्सा और आत्म-नियंत्रण की कमी तेजी से बढ़ रही है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो के अनुसार, भारत में 15 से 29 वर्ष के युवाओं की मृत्यु का एक मुख्य कारण आत्महत्या है। कम उम्र में स्मार्टफोन का अत्यधिक उपयोग, स्क्रीन टाइम बढ़ना और संयुक्त परिवारों का टूटना युवाओं को अकेला बना रहा है।

इस जानलेवा स्थिति से परिवार को सुरक्षित रखने के लिए माता-पिता और युवाओं दोनों को तुरंत कदम उठाने होंगे। इसके लिए शुरुआती उम्र में फोन से दूरी बनाएं। बच्चों को शांत रखने के लिए बचपन से ही हाथ में फोन थमाने की आदत बिल्कुल बंद करें। बच्चों को स्क्रीन एडिक्शन से बचने के लिए उन्हें समय दें। बच्चों के साथ हर दिन बिना फोन के बैठें, खेलें और उनके मन की बात सुनें। बच्चों की हर जिद (विशेषकर महंगी चीजों की) तुरंत पूरी न करें। उन्हें अभाव और सब्र का महत्व सिखाएं। यदि बच्चा फोन न मिलने पर खाना छोड़ रहा है, हिंसक हो रहा है या खुद को कमरे में बंद कर रहा है, तो यह खतरे की घंटी है इन बदलावों को समय रहते पहचानें।

इसके साथ ही परिवार में डिजिटल डिटॉक्स के नियम अपनाएं जैसे नो-फोन जोन यानी घर के डाइनिंग टेबल और बेडरूम में मोबाइल का उपयोग पूरी तरह वर्जित करें। डिजिटल डिटॉक्स के तहत सप्ताह में कम से कम एक दिन या कुछ घंटे पूरे परिवार के साथ बिना गैजेट्स के बिताएं। यदि परिवार में कोई व्यक्ति या युवा गंभीर अवसाद, स्क्रीन की लत या आत्महत्या के विचारों से जूझ रहा है, तो इसे नजरअंदाज न करें। तुरंत क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट से काउंसलिंग कराएं या भारत सरकार की मुफ्त और गोपनीय हेल्पलाइन पर संपर्क करें। हमें यह समझना होगा कि चीजें और तकनीक दोबारा खरीदी जा सकती हैं, लेकिन खोई हुई जिंदगी और परिवार कभी वापस नहीं आते। इस बात को हम जितनी जल्दी समझ लेंगे, उतना ही सभी के लिए बेहतर होगा।

–डॉ. मोनिका शर्मा,
वरिष्ठ पत्रकार

लंदन डायरी : ब्रिटिश स्वाभिमान के प्रतीक हैं लंदन के लाल टेलीफोन बूथ

भारत में डिजिटल क्रांति के बाद टेलीफोन बूथ अब कहीं देखने को नहीं मिलते। हाथ में हर समय मोबाइल थामे नयी पीढ़ी के लिए ये बूथ अब कोतुहल के विषय बन गए है। मगर लंदन में आपको आज भी लाल रंग के टेलीफोन बूथ देखने को मिल जायेंगे जो वहां की विशिष्ट पहचान है। लंदन के लाल रंग के ये बूथ दुनिया भर में ब्रिटिश सांस्कृतिक आइकॉन के रूप में देखे जाते है। बूथ में रखा टेलीफोन चालू अवस्था में है।

लन्दन भ्रमण के दौरान मुझे इन बूथों को देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने बूथ में जाकर देखा तो ये चालू अवस्था में मिले। इसी के साथ अब डिजिटल टेलीफोन बूथ भी लन्दन की सड़कों पर देखने को मिल जायेंगे। इनके लाल रंग के होने की भी एक कहानी है। बताते है उन्नीसवीं शताब्दी में सबसे पहले डाक विभाग ने अपने पोस्ट बॉक्स बनाये वे हरे रंग के थे। लन्दन अपनी हरियाली के लिए जाना जाता है। हरियाली से मिलता रंग अंग्रेजों को पसंद नहीं आया क्योंकि लोग इन्हें सही ढंग से देख नहीं पाते। लोग अत्यधिक हरियाली के कारण इनसे टकरा जाते, ऐसी स्थिति में उन्हें लाल रंग से रंगा गया जो दूर से ही दिख जाते। बाद में 1920 में जब टेलीफोन बूथ बने तो उन्हें लाल रंग से ही रंगा गया। तब से आजतक ये बूथ लाल टेलीफोन बूथ के नाम से ख्यात है। समय के साथ टेलीफोन बूथ दुनियां से मिट गए मगर लंदन में स्थान स्थान पर ये बूथ जीवित अवस्था में देखे जा सकते है। 1980 के बाद नए बूथ नहीं लग रहे है मगर पुराने बूथ सैलानियों के आकर्षण बने हुए है।

मोबाइल फोन की क्रांति ने दुनिया भर में पीसीओ के कारोबार को चौपट कर दिया है। ब्रिटेन के लोग इससे खासे परेशान हैं। लोगों का कहना है कि लाल रंग का टेलीफोन बूथ उनकी

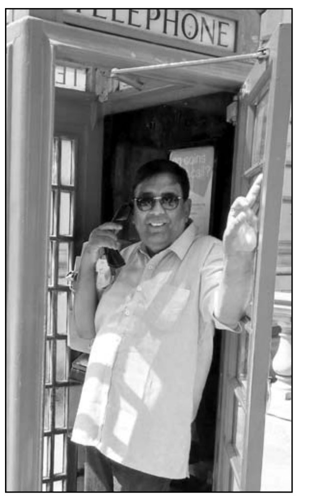

भावनाओं का एक अहम हिस्सा, जिसे वह जिंदा रखना चाहते हैं। ये बूथ 1936 से इंग्लैंड की खास पहचान बने हुए है। 1926 से टेलीफोन बूथों को ब्रिटिश शासन के प्रतीक ट्ययूडर ताज से सजाया गया ।

ब्रिटेन का पहला पब्लिक फ़ोन बूथ, जिसे 1 के नाम से जाना जाता है, 1920 में लंदन की सड़कों पर आया। कंक्रीट से बने और लाल दरवाज़े वाले इस बूथ में कोई खास सुंदरता नहीं थी। सन 1923 में, ज़्यादा आकर्षक टेलीफ़ोन बॉक्स बनाने के लिए एक डिज़ाइन प्रतियोगिता शुरू की गई। इसमें मशहूर आर्किटेक्ट्स के प्रस्ताव आए, जिनमें सर जाइल्स गिल्बर्ट स्कॉट भी शामिल थे जो विजेता बने।

स्कॉट का शानदार, कास्ट आयरन वाला डिज़ाइन सेंट पैनक्रास में सर जॉन सोएन के मक़बरे की गुंबददार छत से प्रेरित था। इस तरह, 2 लाल टेलीफ़ोन बॉक्स का जन्म हुआ, जिसमें चमकीला लाल रंग और आर्ट-डेको स्टाइल था, जो जल्द ही लंदन की सड़कों पर छा गया। 1935 में, किंग जॉर्ज पंचम की सिल्वर जुबली मनाने के लिए 6 मॉडल पेश किया गया। यह लंदन के बाहर लगाया गया पहला लाल टेलीफ़ोन बॉक्स था, जिससे यह पसंदीदा डिज़ाइन ब्रिटेन के कस्बों और गाँवों तक पहुँचा। इसने लाल बॉक्स की देशव्यापी लोकप्रियता की शुरुआत की।

धीरे-धीरे लाल टेलिफ़ोन बूथ सीन से ग़ायब होने लगे। लेकिन स्थानीय समुदायों और ब्रिटिश दूरसंचार के प्रयासों से उनमें से सैकड़ों लाल टेलिफ़ोन बक्सों को पुस्तकालयों के रूप में पुनर्जीवित कर दिया है। ब्रिटेन के लोग अपने लोकप्रिय ब्रिटिश लाल टेलीफोन बॉक्स को छोटे-छोटे पुस्तकालयों में बदल रहे हैं। यहां से कोई भी पुस्तक घर ले जाने के लिए स्वतंत्र है, बशर्ते वे इसे वापस लाएँ या इस के बदले घर से लाकर कोई दूसरी पुस्तक रख दे।

–बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 9 सितम्बर, 2026

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2083, आश्लेषा नक्षत्र दिन 3:14 तक, शिव योग रात्रि 9:52 तक, तैतिल करण दिन 12:31 तक, चन्द्रमा आज दिन 3:14 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मिथुन, बुध-कन्या, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज भद्रा दिन 12:31 रात्रि 11:32 तक रहेगी। आज अघोरा चजुरदशी व्रत, मास शिवरात्रि, जैन पयुर्षण आरम्भ (पंचमी पक्ष)

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:19 तक, शुभ 10:51 से 12:24 तक, चर 3:30 से 5:03 तक, लाभ 5:03 से सूर्यास्त तक।

राहुकाल: 12:00 से 1:30 तक, सूर्योदय 6:13, सूर्यास्त 6:35

मेष

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृष

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आज परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

कर्क

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

सिंह

आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

वृश्चिक

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।

धनु

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मकर

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ

विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

मीन

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा।